

डॉ. रॉबर्ट यारब्रो, द जोहानिन एपिस्टल्स, बैलेंसिंग लाइफ इन क्राइस्ट। सत्र 7, 1 यूहन्ना - पूर्ण पैमाने पर विश्वास। खंड 4 [3:9-4:6] केंद्रीय चेतावनी; खंड 5 [4:7- 14] आधारभूत आज्ञाएँ

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो और जोहानिन पत्रों पर उनकी शिक्षा है, मसीह में जीवन को संतुलित करना। यह सत्र 7, 1 यूहन्ना, पूर्ण पैमाने पर विश्वास है। खंड 4 [3:9-4:6] केंद्रीय चेतावनी। खंड 5 [4:7-14] आधारभूत आज्ञा।

जैसा कि हम 1 यूहन्ना का अध्ययन जारी रखते हैं, हम पुस्तक के मध्य में आगे बढ़ते हैं। और कुल मिलाकर, हम जोहानिन पत्रों में मसीह में जीवन को संतुलित करने के बारे में बात कर रहे हैं।

और जैसा कि हमने पिछले व्याख्यान में देखा, इसमें सुसमाचार के वचन का कार्य शामिल है, जो विश्वास, व्यवहार में परिवर्तन और परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध लाता है। इसलिए, विश्वास प्रेम में काम करता है। यह संतुलित ईसाई जीवन है।

और हम उन सभी क्षेत्रों में बढ़ते हैं, और हम उन सभी क्षेत्रों में ठंडे पड़ सकते हैं या भटक सकते हैं। इसलिए, जैसा कि यूहन्ना लिखता है, विशेष रूप से 1 यूहन्ना में, वह विश्वास के मामलों पर जोर देता है, जैसे कि मसीह का सिद्धांत, कार्यों के मामले, जैसे कि लोग आज्ञाओं का पालन कर रहे हैं या नहीं, और प्रेम के मामले, चाहे लोग अपने पड़ोसी से प्रेम करने के अर्थ में परमेश्वर से प्रेम करने के लिए समर्पित हों या नहीं। और यह अक्सर यूहन्ना की बयानबाजी को स्पष्ट करता है।

वह इन तीन चीजों में से एक या दो पर जोर दे रहा है। और जब भी वह विश्वास के बारे में बात करता है, तो वह आज्ञाओं के बारे में नहीं भूलता है। जब वह आज्ञाओं के बारे में बात करता है, तो वह प्रेम के बारे में नहीं भूलता है।

और, आप जानते हैं, जब भी वह उनमें से किसी एक का उल्लेख करता है, तो वे तीनों मौजूद होते हैं। इन दो खंडों, खंड चार और पांच में, हमारे पास सबसे पहले एक केंद्रीय चेतावनी है, और वह खंड चार है। और फिर हमारे पास एक आधारभूत अनिवार्यता है।

और इसलिए, आइए मुख्य चेतावनी पर चलते हैं। और यह चेतावनी, अध्याय तीन, श्लोक नौ से शुरू होती है, कैन की गलती और झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहने की है। हम देखेंगे कि वह प्रेम के आह्वान के साथ शुरू होता है।

और ऐसा लगता है कि वह बस किसी चीज़ की निंदा कर रहा है। लेकिन हम देखेंगे कि जब वह अंश के अंत तक पहुँचेगा, तो वह अपने पाठकों को प्यार की सराहना करेगा। और इसलिए, इसका लक्ष्य सिर्फ किसी बात को कमतर आंकना नहीं है, बल्कि इसका लक्ष्य अपने पाठकों या अपने श्रोताओं के सामने एक परिदृश्य का रेखाचित्र बनाना है, अगर यह उनके लिए पढ़ा जा रहा

है, ताकि जब यह खत्म हो जाए, तो उन पर यह प्रभाव पड़े कि मैं उस आदमी की तरह नहीं बनना चाहता।

मैं ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूँ जो परमेश्वर के प्रेम को प्रतिबिम्बित करता हो। इसलिए पिछले भाग में जिस विषय पर उन्होंने बात की थी, उसे जारी रखते हुए, परमेश्वर से जन्मा कोई भी व्यक्ति पाप करने की आदत नहीं डालता, क्योंकि परमेश्वर का बीज उसमें रहता है। और इसका अर्थ यह हो सकता है कि परमेश्वर का बीज, परमेश्वर के वचन के बीज की तरह, एक व्यक्ति में रह सकता है।

ज़्यादातर लोग यही सोचते हैं। लेकिन आप इसका अनुवाद परमेश्वर की संतान के रूप में भी कर सकते हैं। तो, परमेश्वर का बच्चा, परमेश्वर के बच्चे, परमेश्वर में रहते हैं।

तो, बीज का मतलब वचन हो सकता है, लेकिन ग्रीक शब्द, अपने व्यापक उपयोग में, वंशज या संतान भी है। तो, किसी भी तरह से, परमेश्वर का वचन लोगों में रहता है, या परमेश्वर के लोग परमेश्वर में रहते हैं। आप पाप करते नहीं रह सकते क्योंकि आप परमेश्वर से पैदा हुए हैं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर की संतान कौन हैं और शैतान की संतान कौन हैं। जो कोई धार्मिकता का काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं है, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता। क्योंकि यह वही संदेश है जो तुमने आरम्भ से सुना है, कि हमें एक दूसरे से प्रेम रखना चाहिए।

अगर हम पहले से ही सोच रहे थे कि शुरू से ही क्या संदेश था? यहाँ, यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा है। हमें कैन की तरह नहीं होना चाहिए, जो दुष्ट था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी। और उसने उसे क्यों मारा? क्योंकि उसके अपने काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धार्मिक थे।

हे भाइयो, इस से अचम्भा न करो कि संसार तुम से बैर रखता है; क्योंकि हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं: जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु में रहता है।

जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता। हम प्रेम इसी से जानते हैं कि उसने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया। बेशक, यह मसीह की ओर संकेत करता है।

और हमें अपने भाइयों के लिए अपनी जान दे देनी चाहिए। लेकिन अगर किसी के पास दुनिया की सारी संपत्ति है और वह अपने भाई को ज़रूरत में देखता है, फिर भी उसके प्रति अपना दिल बंद कर लेता है, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? छोटे बच्चों, हमें सिर्फ़ शब्दों या बातों से नहीं, बल्कि काम और सच्चाई से प्रेम करना चाहिए। तो, उन आयतों से कुछ बातें सीखिए।

प्रेम के आह्वान के शीर्षक के अंतर्गत, केंद्रीय चेतावनी के शीर्षक के अंतर्गत। तो, सबसे पहले, एक विभाजन हुआ है। अध्याय 219, वे हमसे बाहर चले गए, वे हम में से नहीं थे।

मुझे लगता है कि कुल मिलाकर, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कुछ कठोर भावनाएँ थीं। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने एक-दूसरे से संबंध तोड़ लिए थे। शायद कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ लोग एक-दूसरे का अपमान करते थे, एक-दूसरे से नफरत करते थे, एक-दूसरे की उपेक्षा करते थे।

और मुझे लगता है कि विभाजन के बाद, उन्होंने लोगों से कहा कि आपको मसीह में बने रहना चाहिए, और उन लोगों का अनुसरण नहीं करना चाहिए जो चले गए हैं। उस अव्यवस्था और उस प्रस्थान के बाद, आप बता सकते हैं कि कौन कौन है। ईश्वर से जन्मे लोगों की पहचान करना संभव है।

जो लोग बाहर चले गए हैं, वे टिके नहीं हैं, वे धार्मिकता का पालन नहीं कर रहे हैं, वे अपने भाई से प्रेम नहीं कर रहे हैं, उन्होंने खुद को प्रेरितिक संगति से अलग कर लिया है। और आप बता सकते हैं कि कौन कौन है। तो, प्रेम के आह्वान के इस विचार के तहत वह यहाँ पहली बात यही कहता है।

आपको अपना सिर खुजलाने और यह सोचने की ज़रूरत नहीं है कि क्या मुझे उन लोगों का अनुसरण करना चाहिए जिन्होंने प्रेरित समुदाय से अलग होकर घृणा का प्रदर्शन किया है? दूसरी बात, हमने पहले 1:5 में सुना था कि परमेश्वर प्रकाश है। यह पुस्तक के महान विषयों में से एक है। इसका दूसरा पहलू एक दूसरे से प्रेम करना है।

उनसे अलग मत हो। श्लोक 11 और 12. यही वह संदेश है जो तुमने सुना है।

बाद में देखेंगे। और इसलिए, हमें कैन की तरह नहीं बनना चाहिए।

हमें चर्च में एक दूसरे से अलग नहीं होना चाहिए। फिर, इस खंड के बाकी हिस्सों के माध्यम से, मूल रूप से, हमें याद दिलाया जाता है कि प्रेम केवल एक संज्ञा नहीं है। यह जॉन के लिए एक अमूर्त अवधारणा नहीं है।

यह एक गतिविधि है। यह एक क्रिया है। यह एक रिश्ते का प्रत्यक्ष परिणाम है।

अगर आपका किसी व्यक्ति के साथ रिश्ता है, या मैंने देखा है, एक कुत्ते के साथ भी रिश्ता है। एक अच्छा कुत्ता और एक बच्चा जिसके पास एक अच्छा कुत्ता है, वे दोस्त की तरह हैं। वह बच्चा कुत्ते के साथ रिश्ते में है।

यह देखने में एक प्यारी और खूबसूरत चीज़ हो सकती है। यह प्यार है। यह प्यार है जहाँ प्राणियों के बीच एक रिश्ता होता है।

वे एक दूसरे के बारे में जानते हैं, और वे एक दूसरे के साथ जुड़कर रहते हैं। ईसाई समुदाय में प्रेम को एक अवधारणा के रूप में परिभाषित करना संभव है। आप इसे यीशु द्वारा किए गए कार्यों के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

यह प्रेम है। वह मेरे पापों के लिए मरा। यह बहुत सच्ची बात हो सकती है, लेकिन बहुत ही निष्फल बात।

लेकिन जॉन के लिए, प्रेम एक क्रिया है। यह प्रेम जो दूसरों के प्रति जागरूकता और उनकी ज़रूरतों में खुद को दिखाता है, वह ईश्वर की संतान होने का प्राथमिक चिह्न है। यह एक आश्वासन भी है कि आपके पास अनंत जीवन है।

अगर आपको दूसरों के लिए चिंता दिखाने की मजबूरी महसूस होती है, तो यह एक अच्छा संकेत है। यह एक परेशान करने वाला संकेत हो सकता है क्योंकि आप कह सकते हैं, ओह, काश मेरा दिल कठोर होता तो मैं दूसरों की ज़रूरतों से परेशान नहीं होता। लेकिन फिर अपने सही दिमाग में, आप महसूस करते हैं, ठीक है, यह एक अच्छी बात है कि मैं दूसरों की ज़रूरतों से परेशान हूँ क्योंकि यह एक संकेत है कि भगवान ने मेरी ज़रूरतों को संबोधित किया है, और भगवान मेरे लिए वास्तविक हैं, और मैं दूसरों की ज़रूरतों को संबोधित करना चाहता हूँ क्योंकि मेरे लिए भगवान वही हैं।

वह एक ऐसा ईश्वर है जो प्रेम दिखाता है, और वह एक ऐसा ईश्वर है जो मुझे अन्य लोगों के साथ उसके प्रेम में भाग लेने में सक्षम बनाता है। तो यह प्रेम करने के आह्वान के बारे में थोड़ा सा था। कैन की तरह मत बनो।

से प्यार करो। एक दूसरे से प्यार करो। तब हमें प्यार की पुष्टि मिलेगी।

इससे हम जान सकेंगे कि हम सत्य के हैं और उसके सामने अपने हृदय को आश्वस्त कर सकेंगे। इन शब्दों की व्याख्या ऐसे लोगों के संदर्भ में की जानी चाहिए जो चर्च में दरार के कारण अस्थिर हो गए हैं। मुझे नहीं पता कि आप कभी ईसाई समुदाय के अलगाव का हिस्सा रहे हैं या नहीं, लेकिन इससे बहुत पीड़ा होती है, कभी-कभी बहुत अनिश्चितता होती है, बहुत अस्थिरता होती है।

और यूहन्ना उन लोगों को स्थिर करने की कोशिश कर रहा है जो अभी-अभी किसी ऐसी चीज़ से गुज़रे हैं जो उनके लिए एक तरह से दर्दनाक है। उसके सामने अपने दिल को आश्वस्त करें, पद 20। क्योंकि जब भी हमारा दिल हमें दोषी ठहराता है, तो परमेश्वर हमारे दिल से बड़ा है, और वह सब कुछ जानता है।

हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोषी न ठहराए, तो हमें परमेश्वर के साम्हने हियाव होता है। और जब हम मांगते हैं, तो उससे पाते हैं, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और वही करते हैं जो उसे भाता है। और उसकी आज्ञा यह है, कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक दूसरे से प्रेम रखें, जैसा कि उसने हमें आज्ञा दी है।

जो कोई उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें बना रहता है। और इससे हम जानते हैं कि वह उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दी है, हम में बना रहता है। तो, उन आयतों के बारे में कुछ टिप्पणियाँ।

सबसे पहले, आश्वासन परमेश्वर के चरित्र में निहित है, न कि हमारे आत्म-विश्वास में। हम सभी कहावत जानते हैं, अपने पूरे दिल से यहोवा पर भरोसा रखो, और अपनी समझ का सहारा मत लो। अपने सब कामों में, उसे स्मरण करो, और वह तुम्हारे मार्गों को सीधा करेगा।

जॉन यहाँ इसी तरह की नींव के बारे में बात कर रहे हैं। यहाँ बताया गया है कि हम कैसे जानते हैं कि हम सत्य के हैं और अपने दिलों को कैसे आश्वस्त करते हैं। जब हमारा दिल हमें दोषी ठहराता है, तो परमेश्वर महान है, और वह सब कुछ जानता है।

इसलिए, हो सकता है कि इस विभाजन ने हमें अस्थिर कर दिया हो, लेकिन ईश्वर विभाजन से कहीं बड़ा है। और इसलिए हमारे पास एक आश्वासन है जो खुद को आश्वस्त करने की हमारी अपनी क्षमता से परे है। जब आपदा आती है तो यह बहुत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि, आप जानते हैं, हम प्राणी हैं।

और ऐसी चीजें होती हैं जो हमसे बड़ी होती हैं, और वे हमें जकड़ लेती हैं, और हम असहाय हो जाते हैं। ऐसा तब हो सकता है जब कोई मर जाता है, अगर आपको कभी दुख हुआ हो। चाहे आपका उद्धार का आश्वासन कितना भी पक्का क्यों न हो, आपका कोई करीबी मर सकता है, और यह इतना अप्रत्याशित हो सकता है कि आप खुद को सोने में असमर्थ पाते हैं, शायद खाने में भी असमर्थ।

आप खुद को एक बदली हुई स्थिति में पाते हैं, और आपको बस इसे सहना होता है। इसमें कुछ घंटे या कुछ दिन लगने वाले हैं। एक दिन, जब हमारे यहाँ बहुत बड़ा तूफ़ान आया, और मैं अपने घर वापस आया, और मेरे घर पर एक पेड़ था, और हर जगह पेड़ थे, और सड़क अवरुद्ध थी, और ऐसा लग रहा था जैसे कोई बम फट गया हो।

आप जानते हैं, हम इसे सदमा कहते हैं। आप जानते हैं, आप चीज़ों को देख रहे हैं, और आप इसे संसाधित नहीं कर सकते। और उन क्षणों में, आप बस इतना ही कह सकते हैं, अगर आप ईश्वर में विश्वास करते हैं, अगर आप मसीह को जानते हैं, तो आप बस इतना ही कह सकते हैं, ईश्वर के पास इसका आदेश है, और मैं इसे नहीं समझता, लेकिन वह अच्छा है, और मैं उस पर भरोसा करने जा रहा हूँ।

और इन घंटों में, जब मैं और मेरी पत्नी इस विनाश को समझने की कोशिश कर रहे थे, मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, उसने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, आप बस इतना ही कह सकते हैं, भगवान देता है, और भगवान लेता है। और मैंने कहा, हाँ। मैंने पूछा, और आगे क्या लिखा है? और उसने कहा,, भगवान का नाम धन्य हो।

इसलिए ईश्वर सब कुछ जानता है, और ईश्वर हमारे छोटे-छोटे व्यक्तिगत हृदयों की अस्थिरता से कहीं अधिक महान है। आप जानते हैं, इस समय पृथ्वी पर आठ अरब लोगों में से एक व्यक्ति, और आप जानते हैं, उन सैकड़ों अरबों लोगों में से जो सदियों से ईश्वर के प्रति समर्पित हैं, ईश्वर इतना महान है कि वह हमें एक ऐसी स्थिरता दे सकता है जो हमारी अपनी सीमाओं और हमारी अपनी छोटीपन से परे है। यहीं पर आश्वासन निहित है।

यह परमेश्वर में निहित है। हम पद 23 में देखते हैं कि विश्वास, आज्ञाकारिता और प्रेम सुसमाचार ग्रहण करने की पहचान हैं। यह उस चार्ट से संबंधित है जो मैंने पिछले व्याख्यान में दिखाया था, कि हमारे पास विश्वास है, हमारे पास विश्वास करने की क्षमता है, हमारे पास आज्ञाएँ या कार्य या आज्ञाकारिता है, और हमारे पास प्रेम है।

और ध्यान दें कि वे तीनों ही आयत 23 में हैं। यह उसकी आज्ञा है कि हम उस पर विश्वास करें और उससे प्रेम करें। संतुलित मसीही जीवन में यही शामिल है।

और अब, मुझे लगता है, जॉन के पत्र में पहली बार किसी ऐसे व्यक्ति का परिचय है जिसे वह जानता है कि वह पूरे समय मौजूद था, क्योंकि जॉन ने एक सुसमाचार लिखा था। और उस सुसमाचार में, यीशु ने, जब वह अभी भी धरती पर था, आत्मा को भेजने का वादा किया था। और जॉन ने सुना, और फिर जॉन ने आत्मा को प्राप्त किया।

तो, जब वह यह लिख रहा है, तो उसे पवित्र आत्मा के बारे में शायद 50 साल से पता है। लेकिन इस आयत में, पहली बार, उसने पवित्र आत्मा का जिक्र किया है। और आत्मा आश्वासन का काम करती है।

परमेश्वर और परमेश्वर के पुत्र के साथ, और उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया, हमारे विश्वास, हमारी आज्ञाकारिता, हमारे प्रेम के साथ। जब हम परमेश्वर को जवाब देते हैं, तो हमें यह आश्वासन मिलता है कि वह हमारे भीतर रहता है। और यह हमारे बीच भी अनुवादित किया जा सकता है।

यह सिर्फ एक व्यक्तिगत बात नहीं है, यह एक सामुदायिक बात है। परमेश्वर के लोग, पति, पत्नी और विवाह, सुसमाचार में सहकर्मी। ऐसा नहीं है कि यीशु हमारे साथ व्यक्तिगत रूप से मौजूद है, बल्कि वह हमें एक सामूहिक उपस्थिति से एक साथ बांधता है, और जॉन यहाँ इसका उल्लेख करता है।

इसके बाद, हमें एक सम्मन चुनना है। इस बड़े भाग में, वह बात कर रहा है, आप जानते हैं, यह एक चेतावनी है। और इस चेतावनी के संबंध में हमारे पास एजेंसी है।

हम एक निश्चित तरीके से रहना चुन सकते हैं। वह कहता है, प्रिय, हर आत्मा पर विश्वास मत करो। लेकिन आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं।

क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। इसी से तुम परमेश्वर का आत्मा पहचान सकते हो। जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है, वह परमेश्वर की ओर से है।

और हर आत्मा जो यीशु को स्वीकार नहीं करती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में आपने सुना था कि वह आ रही है। और अब यह दुनिया में पहले से ही मौजूद है।

इन आयतों के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है। लेकिन एक बात जो हम इस किताब में कह सकते हैं, जो प्यार के बारे में इतनी बात करती है, वह यह है कि प्यार का मतलब भोलापन नहीं है। प्यार का मतलब सिर्फ वही नहीं है जो मैं पुष्टि करता हूँ, जिसके बारे में मुझे अच्छा लगता है, जिसके बारे में मुझे अच्छा लगता है, जिसे मैं प्यार करता हूँ; वह प्यार है।

प्यार तो प्यार है। जॉन के मन में जो प्यार है वह समझदारी भरा है। यह उन आत्माओं, आवाज़ों, प्रभावशाली लोगों को परखता है जो हमारे आस-पास हैं और जो हमें प्रभावित करना चाहते हैं।

इसलिए, प्रेम केवल एक भावना या अनुभूति नहीं है। इसे परखा जा सकता है। दूसरे, यीशु मसीह के बारे में विश्वास यह बताता है कि दावे या विचार सत्य हैं या नहीं।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि 1 यूहन्ना में एक मुख्य विचार यह है कि परमेश्वर प्रकाश है। लेकिन एक कारण यह है कि यूहन्ना अदृश्य परमेश्वर के बारे में बात करता है, बाद में वह यह कहने जा रहा है कि परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा है, और उसने यूहन्ना अध्याय 1 में यह कहा है। जब परमेश्वर अदृश्य होता है, तो उसके दृश्य होने के बारे में बात करने का एक कारण यह है कि मसीह आ चुका है। मसीह ने परमेश्वर को हमारे सामने प्रकट किया है।

और इसका मतलब यह है कि आप मसीह के बारे में जो सोचते हैं, वह ईश्वर के बारे में आपकी सोच को परिभाषित करता है। यदि आप सोचते हैं कि मसीह एक सृजित प्राणी है और त्रिदेव का दूसरा व्यक्ति नहीं है, ईश्वरीय है, और अनंत काल में पिता के साथ एक है, तो ईश्वर की आपकी परिभाषा उस परिभाषा से अलग है, यदि आप सोचते हैं कि यीशु ईश्वर का पुत्र है जिसने ईश्वर को इस दुनिया में उस संपूर्णता के साथ प्रकट किया है जो ईश्वरत्व के लिए उसके अंदर प्रकट होना संभव है। मसीह ईश्वर का पुत्र है जिसने ईश्वर को मानव रूप में प्रकट किया।

इसलिए, यही कारण है कि यूहन्ना मसीह के व्यक्तित्व और मसीह के कार्य पर इतना ज़ोर देता है, क्योंकि वह परमेश्वर के लिए उत्साही है, जो प्रकाश है। और अगर आप यीशु को गलत समझते हैं, तो आप परमेश्वर को सही नहीं समझते। हो सकता है कि आपके पास एक यीशु हो जो वास्तव में आपको अंधकार में ले जा रहा हो।

यह असली यीशु नहीं है। और वह इसे यहाँ ऐसे यीशु के रूप में परिभाषित करता है जो देह में आया है। और अगर आप जानना चाहते हैं कि इसका क्या मतलब है, तो यूहन्ना का सुसमाचार पढ़ें।

जॉन का सुसमाचार यीशु द्वारा कही गई बातों और यीशु द्वारा किए गए कार्यों का एक लंबा प्रतिलेख है, हालांकि जॉन 1:18 में कहा गया है कि, किसी ने भी कभी परमेश्वर को नहीं देखा है, वह परमेश्वर पिता है, वह परमेश्वर जो कहता है कि वह प्रकाश है, किसी ने भी उस परमेश्वर को नहीं देखा है, लेकिन परमेश्वर के एकमात्र पुत्र या एकमात्र पुत्र ने उसे समझाया है। उसने पृथ्वी पर ऐसा जीवन जिया है जो अदृश्य, पारलौकिक परमेश्वर को दृश्यता प्रदान करता है। इसलिए, आपको चुनने की आवश्यकता है।

आपको विवेक करने की ज़रूरत है। यहाँ मसीह विरोधी की भावना है। यहाँ उन लोगों की भावना है जो जाहिर तौर पर चर्च छोड़ चुके हैं।

लोगों की एक ऐसी भावना है जो यीशु मसीह को देह में आया हुआ नहीं मानती। और आपको यह तय करना होगा कि ईश्वर कौन है और आप मसीह को कौन मानते हैं। और बेशक, मुझे लगता है कि वह उन लोगों को लिख रहे हैं जिन्होंने शुरुआत में सही निर्णय लिया था।

और वह कह रहा है, अपने इस निर्णय पर अडिग रहो कि यीशु वास्तव में यही हैं। हमारी आधुनिक दुनिया में, हर एक या दो दशक में, एक नया आंदोलन होगा जो यह तय करेगा कि यीशु वह नहीं है जिसे चर्च ने स्वीकार किया है। 60 और 70 के दशक में, ईश्वर के अवतार का मिथक नामक एक आंदोलन था, ईश्वर के अवतार का मिथक।

और ये यू.के. और उत्तरी अमेरिका के विद्वान थे। और वे किताबें और लेख लिख रहे थे कि कैसे, वास्तव में, यीशु में ईश्वर के आने का यह विचार एक प्राचीन मिथक था। और हमें इस पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

और फिर, कुछ साल बाद, जीसस सेमिनार नाम की एक चीज़ हुई। और जीसस सेमिनार के लोगों ने यह नहीं सोचा कि जीसस ईश्वर के पुत्र थे। और वास्तव में, उन्होंने सुसमाचार में जीसस की कही बातों पर वोट किया।

उन्होंने अलग-अलग रंग के मोतियों का इस्तेमाल किया। और 70 या 80 विद्वानों का एक समूह था। और वे वोट देते थे, क्या यीशु ने यह कहा? और क्या यीशु ने वह कहा? और प्रभु की प्रार्थना में, वे निश्चित रूप से जानते थे कि उसने कहा, हमारे पिता।

लेकिन प्रभु की प्रार्थना में कोई अन्य शब्द निश्चित नहीं थे। इसलिए, हर समय, हर समय आत्माएं मौजूद रहती हैं। और कई बार, हम उन्हें ईस्टर के आसपास CNN या किसी अन्य चैनल पर देखते हैं, क्योंकि यह लोगों को मीडिया पर देखने के लिए कुछ चौंकाने वाली बात प्रचारित करने का अच्छा समय होता है।

मसीह के बारे में कुछ नया सिद्धांत। और यूहन्ना बस यही कह रहा है, जो हमने देखा है, उसी में बने रहो। यूहन्ना, पतरस, याकूब और अन्य लोग परमेश्वर के पुत्र के अवतार के प्रेरितिक गवाह हैं।

यदि आप चुनते हैं, तो यह आपकी पुष्टि है। जैसा कि आप चुनते हैं, यह आपकी पुष्टि है। छोटे बच्चों, आप परमेश्वर से हैं, और आपने उन पर विजय प्राप्त की है।

अर्थात्, वे आत्माएँ, चर्च में विभाजनकारी गुट। आपने उन पर विजय प्राप्त कर ली है, क्योंकि जो आप में है वह उससे बड़ा है जो दुनिया में है। वे दुनिया से हैं। इसलिए, वे दुनिया से बोलते हैं, और दुनिया उनकी सुनती है।

हम परमेश्वर से हैं, अर्थात् प्रेरितिक हम, और विश्वासी जो प्रेरितिक संदेश की पुष्टि करते हैं। जो कोई परमेश्वर को जानता है वह हमारी सुनता है। जो कोई परमेश्वर से नहीं है वह हमारी नहीं सुनता।

इससे हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचानते हैं। पहला सबक, दृढ़ता उसमें है जो हमारे साथ और हमारे बीच है। पद चार, आप परमेश्वर से हैं, आपने उन पर विजय प्राप्त की है।

जो तुममें है और तुम्हारे बीच है, वह संसार में रहने वाले से बड़ा है। यही हमारी दृढ़ता निहित है। जैसे लोग आते-जाते रहते हैं, आंदोलन आते-जाते रहते हैं, दावे आते-जाते रहते हैं, परमेश्वर स्थिर रहता है।

वचन पर हावी हो जाती है। वचन ही शास्त्र है। पद पाँच दुनिया के लोगों के बारे में बात करता है जो दुनिया से बोलते हैं और दुनिया उनकी सुनती है।

और यह स्पष्ट है कि वह यहाँ दुनिया और उन लोगों के बीच संबंध स्थापित कर रहा है जिन्होंने 219 में जोहानिन चर्च को छोड़ दिया है, वे हमसे दूर चले गए। वह उस आयत के बाद से ही उस गुट के बारे में चेतावनी दे रहा है। चर्च के पास एक बहुत ही जटिल कार्य है क्योंकि हमारे परमेश्वर ने दुनिया से बहुत प्यार किया है।

और हमारा मिशन दुनिया में है, और हम दुनिया में रहते हैं। और हम दुनिया से जुड़ना चाहते हैं। हम दुनिया को बेहतर बनाना चाहते हैं।

हम दुनिया के गरीबों की देखभाल करना चाहते हैं। हम दुनिया में अस्पताल बनाना चाहते हैं। ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो हम करना चाहते हैं, और ये सब दुनिया में ही हैं।

लेकिन एक दुनिया ऐसी भी है जो मूर्तिपूजक है। एक दुनिया ऐसी भी है जो ईश्वर की प्रतिद्वंद्वी है। एक ऐसी भी दुनिया है जो यह कहना चाहती है कि ईश्वर नहीं है।

हम ही अधिकारी हैं। हम खुद ही। हम अपने लिए, खुद ही एक स्मार्ट ग्रह का निर्माण कर रहे हैं, और हमें किसी भी तरह की असाधारण मदद की ज़रूरत नहीं है।

और जॉन कह रहा है, यही वह है, यही वह तरीका है जिससे चर्च नष्ट हो जाते हैं, जब वे ईश्वर को अधिकार के रूप में सुनना छोड़ देते हैं, और फिर दुनिया उनका अधिकार बन जाती है। और उन्हें उन चीजों का समर्थन करना होगा जो दुनिया उन्हें बताती है कि उन्हें समर्थन करना चाहिए अगर वे वास्तव में दुनिया के लिए स्वीकार्य होना चाहते हैं। तीसरा सबक यह है कि प्रेरितों का संदेश और शिक्षा ईश्वर से आती है।

और यह आत्माओं की परीक्षा है। आत्माओं से मेरा मतलब है विचार, दावे, शिक्षाएँ, साथ ही वे लोग जो उनका समर्थन करते हैं, और वास्तविक आत्माएँ, अशुद्ध आत्माएँ, वे आत्माएँ जो पवित्र नहीं हैं, बल्कि वे आत्माएँ जो शैतान के अधीनस्थ और संदेशवाहक और सेवक हैं। जब आप समग्र रूप से बाइबल पढ़ते हैं, तो आप देखते हैं कि आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं।

दुनिया में ऐसे देवदूत हैं जो अच्छे हैं। ऐसे देवदूत भी हैं जो अच्छे नहीं हैं। एक ईश्वर है, जो परिपूर्ण है।

शैतान है, जो परमेश्वर के विरुद्ध है। और इन सबका परिणाम यह है कि दुनिया में परस्पर विरोधी आत्माएँ हैं। हमारे पास अच्छी चीज़ें हैं, और हमारे पास अंधकारमय, बुरी और विनाशकारी चीज़ें हैं।

यूहन्ना कहता है, हम, यानी प्रेरित, परमेश्वर से हैं। जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है। जो परमेश्वर से नहीं है, उसने हमारी नहीं सुनी।

इससे हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचानते हैं। यही कारण है कि हम अपनी बाइबल का अध्ययन करते हैं। यही कारण है कि अगर हम चर्च जाने वाले ईसाई हैं तो हम चर्च में कम से कम सप्ताह में एक बार धर्मोपदेश सुनते हैं।

हमें लगातार तीक्ष्णता और परिष्कार की आवश्यकता है और हमें याद दिलाना चाहिए कि परमेश्वर क्या कहता है और परमेश्वर कौन है, ताकि हम जान सकें कि क्या सच है और हम जान सकें कि हमें किससे दूर रहना है या हमें किसका विरोध करना है या हमें किसका स्थान बदलना है। तो यह खंड चार है, मुख्य चेतावनी। कैन की गलती से सावधान रहें।

झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहें। कुछ समझदारी हासिल करें। परमेश्वर के साथ ऐसा रिश्ता चुनें जिसमें विश्वास और परमेश्वर की आज्ञाएँ शामिल हों, और तब हमारे पास वह दृढ़ता होगी जो परमेश्वर देता है, और हम प्रेरितों के संदेश से अपने लाभ और प्रेरितों के समुदाय में अपने जीवन के बारे में अपनी समझ में वृद्धि करेंगे।

हमारे पास एक और खंड है जिसे हम जल्दी से कवर करना चाहते हैं, और मैं इसे आधारभूत अनिवार्यता कहता हूँ, और वह अनिवार्यता ईश्वर का प्रेम है। अब, यह विश्वास करने की आवश्यकता को कम नहीं करता है। यह मसीह के सच्चे सिद्धांत के महत्व को कम नहीं करता है।

इससे आज्ञाओं की प्रासंगिकता कम नहीं होती। लेकिन अब वह सिर्फ परमेश्वर से प्रेम करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। और यहाँ प्रेम करने के लिए दो उपदेशों में से पहला उपदेश है।

हे प्रियो, हम एक दूसरे से प्रेम रखें। क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है, और जो प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

इसमें, या इसे इस तरह से अनुवादित किया जा सकता है, परमेश्वर का प्रेम हमारे बीच प्रकट हुआ है कि परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा ताकि हम उसके द्वारा जी सकें। और वह शब्द लाइव वहाँ जोए, जीवन शब्द से है। क्रिया ज़ाओ है, लेकिन यह वह शब्द नहीं है जिसे हमने पहले देखा था, बायोस, जिसका अर्थ है हर दिन, एक दिन काम करना, जीविका कमाना।

यह जीवन की गतिशीलता है जो परमेश्वर देता है। यह मृत शरीर के विपरीत जीवित शरीर की जीवन शक्ति है। हमारे पास जीवन है, और मसीह के द्वारा, हमारे पास अनंत जीवन है।

हम उसके द्वारा जीवित रह सकते हैं। इसमें प्रेम है, न कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया है, बल्कि इसमें कि उसने हमसे प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए भेजा। हम इससे तीन निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

सबसे पहले, पद सात में, परमेश्वर को जानना प्रेम को प्रकट करना और उसका अभ्यास करना है। यदि आप कुछ प्रकट करते हैं, तो आप उससे चमकते हैं। यह आप में से निकलता है।

फिर से, श्लोक सात, आइए हम एक दूसरे से प्रेम करें क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है, और जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। यदि आप परमेश्वर को जानते हैं, तो प्रेम उसका एक चिह्न है। मुझे लगता है कि वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि उसके पास लोग चले गए हैं।

उन्होंने अपनी प्रेमहीनता दिखाई, और वह उन लोगों को आश्चस्त कर रहे हैं जो ईश्वर को जानने का मतलब है। इसका मतलब है एक दूसरे के साथ मिलकर रहना, एक दूसरे को सहन करना, एक दूसरे को काटना या एक दूसरे से अलग नहीं होना। दूसरी बात, ईश्वर प्रेम है इसका मतलब यह नहीं है कि प्रेम ईश्वर है।

और बस इतना कहना ज़रूरी है कि ईश्वर एक व्यक्ति है। ईश्वर कोई गुण नहीं है। वह कोई अमूर्त विचार नहीं है।

जब यूहन्ना कहता है कि परमेश्वर प्रेम है, तो उसका मतलब है कि परमेश्वर का प्रेम बहुत शक्तिशाली है और परमेश्वर का प्रेम मसीह में उसके आत्म-प्रकटीकरण में बहुत प्रमुख है। कि हम कुछ मामलों में परमेश्वर और प्रेम को समान मान सकते हैं, हालाँकि सभी मामलों में नहीं। तो, आप कह सकते हैं कि वह परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर के प्रेम की महानता को बढ़ाने के लिए अतिशयोक्ति का उपयोग कर रहा है।

पिता ने हमें कैसा प्रेम दिया है। यह बहुत ही शानदार बात है कि परमेश्वर ने देह धारण की और हमारे पापों के लिए मर गया, और हमें अनंत जीवन की आशा दी। तो, परमेश्वर प्रेम है।

लेकिन प्रेम ईश्वर का एक गुण है। प्रेम ईश्वर का विकल्प नहीं है। और इसके बारे में शानदार बात यह है कि यह ईश्वर का एक गुण है जिसे वह प्राणियों के साथ साझा कर सकता है।

हम कहते हैं कि ईश्वर के कुछ गुण अवर्णनीय हैं। वह अपनी सर्वज्ञता को व्यक्त नहीं कर सकता। वह सब कुछ जानता है।

मैं कभी भी सबकुछ नहीं जान पाऊँगा। वह एक ही समय में हर जगह मौजूद है। वह सर्वव्यापी है।

मैं सिर्फ़ वही हो सकता हूँ जो मैं हूँ। और भगवान के बारे में और भी बहुत सी बातें हैं, जो भगवान के बारे में पूरी तरह सच हैं और जो किसी भी इंसान के बारे में सच नहीं हैं। लेकिन भगवान का प्यार एक ऐसा गुण है जिसे वह अपने लोगों के साथ बाँट सकता है, और वह ऐसा करता भी है।

तो, यह एक बहुत ही बढ़िया बात है। लेकिन हम इस सोच के जाल में नहीं फंसना चाहते कि, अगर कोई प्यार जता रहा है, तो वह भगवान है। हम भगवान को जाने बिना भी प्यार जता सकते हैं क्योंकि हम भगवान की छवि में बने हैं, और इंसानों में दूसरों की परवाह करने और उनके प्रति सम्मान दिखाने की क्षमता होती है।

तो, जैसे कुत्ते और बिल्लियाँ प्यार कर सकते हैं, वैसे ही वे अपने मालिकों से प्यार करते हैं; लोग इस बात पर बहस कर सकते हैं कि कुत्ते या बिल्लियाँ ज्यादा प्यार करते हैं। अगर आपके पास बिल्ली है, तो आपको लगता है कि आपकी बिल्ली लोगों की सबसे अच्छी दोस्त है। मैं यहाँ इस बारे में नहीं जाऊँगा।

लेकिन चूँकि जानवर भी प्रेम कर सकते हैं, इसलिए निश्चित रूप से लोग भी प्रेम कर सकते हैं। वे परमेश्वर की छवि में बनाए गए हैं। लेकिन फिर एक और तरह का प्रेम है जो मसीह में दिखाए गए परमेश्वर के प्रेम को प्राप्त करने के माध्यम से संभव है, और यही वह है जिसके बारे में जॉन यहाँ बात कर रहे हैं।

प्रेम का माप, नंबर तीन, मानवीय भावना नहीं बल्कि मसीह में ईश्वरीय कार्य है, और विशेष रूप से प्रायश्चित। इसमें प्रेम है, यह नहीं कि हमने ईश्वर से प्रेम किया है, बल्कि यह कि उसने हमसे प्रेम किया, जिसे हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजने के रूप में परिभाषित किया गया है। जब मैं विवाह करता हूँ, तो मैं हमेशा इस संदेश का उपयोग करता हूँ, या जब मैं विवाह करता हूँ, तो इस श्लोक का उपयोग करता हूँ, क्योंकि विवाह करने वाले लोगों के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि मानवीय प्रेम से भी बड़ा प्रेम है।

और अगर आप अपनी शादी में एक परिपूर्ण प्रेम चाहते हैं, तो आपको उस प्रेम की ज़रूरत है जो परमेश्वर ने दूसरों के लिए बलिदान देने के लिए अपने बेटे को भेजकर दिखाया। यही प्रेम का मापदंड है। यह कोई मानवीय भावना नहीं है।

यह मसीह में ईश्वरीय कार्य है, और विशेष रूप से दूसरों के पापों को लेना। यहाँ प्रेम करने का दूसरा उपदेश है। और फिर हम इस भाग को समाप्त कर देंगे।

प्रियो, यदि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, तो हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। परमेश्वर अर्थात् परमेश्वर पिता को उसकी दिव्य महिमा में किसी ने कभी नहीं देखा। यदि हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हम में वास करता है, और उसका प्रेम हम में परिपूर्ण हो जाता है।

इससे हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं और वह हम में बना रहता है क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है। और हमने देखा और गवाही दी है कि पिता ने अपने बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता होने के लिए भेजा है। कुछ त्वरित निष्कर्ष।

नंबर एक, भगवान का प्यार हमें उत्प्रेरित करता है। आप जानते हैं कि उत्प्रेरक क्या होता है। यह कुछ ऐसा है जिसे आप किसी चीज़ में जोड़ते हैं जिससे वह उत्तेजित हो जाती है या सक्रिय हो जाती है।

अगर परमेश्वर हमसे प्यार करता है, तो हमें एक दूसरे से प्यार करना चाहिए। परमेश्वर ने हमारे लिए जो किया है, उससे आगे बढ़कर हमें एक दूसरे के प्रति अपने दृष्टिकोण पर ध्यान देना चाहिए। और परमेश्वर हमें प्रोत्साहित करने के लिए हमारे साथ मौजूद है।

और परमेश्वर की आज्ञाएँ भी हमें उसी दिशा में धकेलती हैं। दूसरा, परमेश्वर का प्रेम दिखाया जाता है और सिद्ध किया जाता है। और इसका मतलब है कि इसका इच्छित प्रभाव पूरा करना।

परमेश्वर हम में वास करता है, और उसका प्रेम परिपूर्ण है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम परिपूर्ण हैं या हम परमेश्वर की तरह परिपूर्णता से प्रेम करते हैं। लेकिन इसका मतलब है कि परमेश्वर का प्रेम कुछ करने, प्रभाव डालने के लिए आगे बढ़ता है।

और यह तब परिपूर्ण होता है जब विश्वासी एक दूसरे से प्रेम करते हैं। मैंने कुछ साल पहले एक कहावत सुनी थी जो हमेशा मेरे साथ रही है, और मुझे लगता है कि यह इस संबंध में बहुत उपयोगी है। कभी भी छोटे-छोटे इशारों की शक्ति को कम मत समझिए।

और जब हम ईसाई समुदाय में रहते हैं, तो कभी-कभी हम कोई छोटी सी बात देखते हैं या किसी छोटी सी बात के बारे में सोचते हैं। हम एक ईमेल भेज सकते हैं। हम एक कार्ड भेज सकते हैं।

हम किसी से कुछ कह सकते हैं। लेकिन हम सोचते हैं, ठीक है, इससे कुछ हल नहीं होने वाला। क्यों परेशान होना? लेकिन कई बार ये छोटी-छोटी हरकतें ही होती हैं जो प्यार का इज़हार करती हैं।

भगवान जानता है कि आपके पास बस इतना ही समय है। और यही आपके लिए उचित है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति किसी की थोड़ी सी भी प्रशंसा करता है तो यह दूसरे व्यक्ति के लिए बहुत मायने रखता है।

कभी-कभी हमें नहीं पता होता कि लोग कितने अकेले हो सकते हैं। हाल ही में, मैं एक ऐसे व्यक्ति से मिला जो चर्च में किसी के साथ बैठा था। और जिन लोगों के साथ वे बैठे थे, वे बहुत प्रभावित हुए क्योंकि वे हमेशा एक ही जगह बैठते थे, और वे हमेशा अकेले बैठते थे।

और यह विचार कि कोई उनके पास आकर बैठेगा, उन्हें बस यही एहसास दिलाता था कि वे बुजुर्ग हैं। और कभी-कभी आप बुजुर्ग हो जाते हैं।

आप जानते हैं, आपके बच्चे दूर हैं, और आपके दोस्त मर रहे हैं, और आपका परिवार मर रहा है। और किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जो छोटा है, आपके साथ आकर बैठना और आपकी परवाह करना, यह उनके लिए बहुत-बहुत सार्थक था। इसलिए प्रेम, ईश्वर का प्रेम, महान और उदात्त और पारलौकिक है, जैसा कि मसीह में दिखाया गया है।

यह तब प्रकट होता है और परिपूर्ण होता है जब हम एक दूसरे से प्यार करते हैं। जब हम एक दूसरे से प्यार करते हैं तो यह एक बड़ी बात होती है। और बेशक, जब हम एक दूसरे से प्यार नहीं करते हैं, तो यह एक बड़ी बात होती है।

के लिए आत्मा के प्रति प्रतिक्रिया ईश्वर में बने रहने का आश्वासन है और इसके विपरीत। यदि आप इस अर्थ में अधिक सुरक्षित होना चाहते हैं कि ईश्वर आपके साथ है, तो आने वाले दिनों में लोगों की एक सूची बनाने और परिस्थितियों में उनके लिए प्रार्थना करने का ध्यान रखें। और यदि ऐसे तरीके हैं जिनसे आप लोगों की देखभाल करने में मूर्त रूप से पहुँच सकते हैं और खुद को शामिल कर सकते हैं, तो ऐसा करें।

और यह कहता है, इससे हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं और वह हम में, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है। इससे हम जानते हैं कि इसका सम्बन्ध एक दूसरे से प्रेम करने से है, जैसा कि परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया है। अंत में, यूहन्ना अपने पाठकों को दिए गए आश्वासन की गवाही देता है।

जॉन कहते हैं, हमने देखा है, जिसमें उनके श्रोता या पाठक शामिल हैं, लेकिन यह विशेष रूप से उन पर लागू होता है, यदि आप 1 जॉन के शुरुआती छंदों पर वापस जाते हैं, तो वह इस बारे में बात करता है कि हमने क्या देखा है, हमने क्या सुना है, हमने क्या छुआ है, हमने क्या संभाला है। यह यीशु के सांसारिक जीवन का साक्ष्य है। हमने देखा है और गवाही दी है कि पिता ने अपने बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता बनने के लिए भेजा।

और यूहन्ना इस भाग का समापन उस आश्वासन की गवाही देकर करता है जो वह अपने पाठकों को देता है कि उसे परमेश्वर से प्राप्त हुआ है। और यह 1 यूहन्ना के पाँचवें भाग का अंत है।

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो और यूहन्ना के पत्रों पर उनकी शिक्षा है, मसीह में जीवन को संतुलित करना। यह सत्र 7, 1 यूहन्ना, पूर्ण पैमाने पर विश्वास है। भाग 4 [3:9-4:6] केंद्रीय चेतावनी। भाग 5 [4:7-14] आधारभूत आज्ञा।